ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

उज्जयिनी सामंत राव सिरदार वैताल भट

डॉ. परीक्षित सिंह राव आसिस्टेंट प्रोफेसर पी. के. कोटावाला आर्ट्स कालेज, पाटण, गुजरात

इतिहास हमेशा रोचक रहता है। भारत के इतिहास पर विश्व के बड़े-बड़े इतिहासकारों ने शोध किया है और आज भी जारी है। भारत के इतिहास की जब बात आती है तब स्वाभाविक रूप से जाती एवं कौम की उत्पत्ति की और किसी वंश के उत्पत्ति की भी कथा आती है। ऐतिहासिक शोध के तरीके से देखा जाए तो जब किसी भी क्षेत्र का इतिहास लिखा जाता है तब उस क्षेत्र में सम्मिलित सभी बातें जो उस क्षेत्र का आधार एवं प्रभाव है उन सभी को लिखा जाता है। उसके बिना इतिहास अधूरा लगता है। ऐतिहासिक लेखन कोई आम लेखन नहीं है, वह पूरा संशोधनात्मक रूप से लिखा जाना चाहिए जिसकी आधारशिला मजबूत हो।

ऐतिहासिक लेखन के आधार प्राचीन अवशेष, दस्तावेज, शास्त्र, लोककथाएँ एवं तथ्य है जिसे आधुनिक तार्किक व वैज्ञानिक ढंग से तराशा जाता है और लिखा जाता है जब ऐसे प्रमाणभूत तथ्य नहीं मिल पाने से लेखक व संशोधक निराश हो जाता है तब उस विषय को छोड़कर दूसरे विषय में शोध कार्य आरंभ करता है। ऐसे तथ्य नहीं मिल पाने से ऐसे कई विषय है जिसे ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा नहीं गया लेकिन उस विषय क्षेत्र के संबंधित लेखों में एवं लौकिक बोलचाल में कुछ तथ्य मिल जाते हैं लिसके आधार पर भी इतिहास लेखन किया जा सकता है।

भारत के ऐसे कुछ जाति वंश रहे हैं जिसका स्पष्ट एवं सीधा इतिहास नहीं लिखा गया लेकिन आज भी उस जाति व वंश के लोगों के पास उस विषय की जानकारियां है । हम इस लेख में ऐसे ही एक गौरवशाली, पराक्रमी और भारत की धरोहर के भागीदार एवं साक्षी रूप वंश की बात रखेंगे, जिसका नाम है बूटरेचा राव सिरदार वंश। इस लेख में बूटरेचा राव सिरदार वंश की उत्पत्ति के बारे में कुछ जानकारियां प्रदान करने की कोशिश करेंगे और इस वंश के पराक्रमी वीर विद्वान महापुरुष राव वैताल भटके बारे में चर्चा करेंगे।

राव वैताल भटको कौन नहीं जानता, महान पराक्रमी सम्राट विक्रमादित्य के नाम के साथ हमेशा जिसका नाम लिया जाता है और जितने गौरव से सम्राट विक्रमादित्य को याद किया जाता है ठीक वैसे ही राव वैताल भटको भी उनके नवरत्न याने मुख्य राज दरबारी की सूची मे याद किया जाता है। सम्राट विक्रमादित्य के वंशजों के बारे में दुनिया को पता है और काफी इतिहास भी लिखा जा चुका है लेकिन राव वैताल भटका इतिहास मात्र विक्रमादित्य से जुड़े कुछ कार्यों से ही दर्शाया गया है और केएम लोगों को ही यह मालूम होगा कि राव वैताल भटके वंशज कौन हैं और आज वह किस नाम से जाने जाते हैं और किस क्षेत्र में उन सभी का निवास है।

इस लेख में राव वैताल भटसे जुड़ी कुछ ऐतिहासिक बातें एवं तथ्य रखकर कुछ समीक्षा करने की कोशिश करेंगे। राव वैताल भटके पिता का नाम राव भीमसेण भटथा। बड़वाजी की पोथी के अनुसार राव वैताल भटके पिता जी राव भीमसेण एक पराक्रमी शासक थे। आज के गुजरात व राजस्थान की सीमा पर स्थित बनासकांठा और पाटन के किसी क्षेत्र पर उनका शासन था लेकिन ऐतिहासिक तथ्य और अवशेष नहीं मिल पाने के कारण बड़वा पोथी को ही आधार मानकर लिखना होगा। राव भीमसेण ब्रह्मा से उत्पन्न ऋषि वंश-आदि वंश (मूल भट ब्रह्मर्षि जिनका कार्य शास्त्र और शस्त्र विद्या से जुड़ा हुआ होता था) विलास गोत्र की शाखा से थे। विलास गोत्र की शाखा के राव सिरदारों में से बाद में उनकी कई शाखाएं निकली, जिसमें बूटरेचा राव सिरदारों का भी एक वंश है (यहाँ जिस गोत्र का उल्लेख किया है वह कोई ऋषि या ब्राह्मण गोत्र नहीं है लेकिन राव सिरदारों की भिन्न भिन्न शाखाओ से सबंधित है।)

जब पाटन गुजरात के इतिहास, प्राकृत एवं संस्कृत के विद्वान अध्यापकों से चर्चा हुई तब उन्होंने भी भीमसेण नामक शास्त्र शस्त्र के विद्वान कोई प्रभावशाली व्यक्तित्व का यहां होने का उल्लेख किया, साथ-साथ उन्होंने यह भी बताया कि यह भीमसेण सोलंकी और चावड़ा वंश से भिन्न है लेकिन परमार से संबंधित हो सकते हैं, क्योंकि आबू नजदीक होने की वजह से वहां के परमार वंश से जुड़ा कोई व्यक्ति भी हो सकता है। लेकिन बड़वा पोथी के आधार पर हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि यह भीमसेण वही है जिसकी हम बात कर रहे हैं और करने वाले हैं।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

राव भीमसेण विलास गोत्र से ही होने के कुछ तथ्यात्मक आधार भी मिल पाए हैं। गुजरात और राजस्थान के इसी वंश के बुजुर्ग लोगों से मिलना हुआ तब उन्होंने कुछ कविता, दुहे बताएं जो सिद्ध करता है कि राव भीमसेण विलास गोत्र के राव सिरदार ही थे।

ब्रह्मा से भट बना, ब्रह्मराव हुआ विलास,

शास्त्र रचे शस्त्र पचे, शिव का हुआ दास ।

विलास मे भीमसेण हुआ, पराक्रम में गर्दभिल्ल,

बड़ो राजा विक्रम हुआ, भीमसेण सूत वैताल ।

इस दो लोकोक्त कवित है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि राव भीमसेण जिसकी हम बात कर रहे हैं वो राव सिरदारों की विलास शाखा (गोत्र) से थे। पहले कवित से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि विलास वंश ब्रह्मा से उत्पन्न है जिसे भट भी कहा जाता था। (भट का मतलब योद्धा, महारथी व ज्ञाता होता है) दूसरे कवित में यह सिद्ध होता है कि राव भीमसेण विलास वंश से थे और राजा गर्दभिल्ल के समकालीन थे जिनका पुत्र वेताल हुआ जो सम्राट विक्रमादित्य के समकालीन थे।

इस ऐतिहासिक तथ्य और लोककथा का आधार बड़वा पौथी भी है। सबसे बड़ा कोई आधार मिला है तो वह भविष्य पुराण में मौर्य वंश के वर्णन में है जिसके आधार पर अब हम चर्चा करेंगे।

भविष्य पुराण के मौर्य वंश के वर्णन में राव वैताल को विक्रम के पास शिव पार्वती ने भेजा था, शिव पार्वती ने विक्रम को ३२ मूर्तियों से युक्त राज्य सिंहासन तथा वेताल नामक विद्वान, बुद्धिशाली, बलशाली को विक्रम के रक्षार्थ सौंपा था। इस कथा में व्यक्त शिव पार्वती को हम नाग लोक के संबंध में भी संदर्भ ले सकते हैं क्योंकि राव वेताल भट का जन्म नाग लोक में हुआ था और उनके पिता भीमसेण नाम के महान योद्धा व विद्वान थे जो कोई खास वजह से नाग लोग गए थे तब वेताल का जन्म नाग लोक में ही हुआ था ऐसा वर्णन बड़वा पोथी में मिलता है इस विषय में कुछ दुहे मिलते हैं जिसके आधार पर यह बात सिद्ध होती है।

भट ने राखी राज, लाज हरख नेण,

नागलोक जेइ मिलो वेई भीमसेण ।

नागलोक माने लिधों वचन देई शिव,

सूत तेइ हुआ सुर बालबुद्धि तेज शिव ।

इस दो दुहे या कवित से यह बात का निष्कर्ष निकलता है कि किसी राजा की सेवा में, राजा की लाज – इज्जत – बचाने के कारण या किसी राजा को खुश रखने के कारण भट भीमसेण को राज मिला और वह शाशन नाग लोक में मिला हो सकता है। दूसरे दुहे में जो वर्णन है वह यह बता रहा है कि नागलोक में सम्मान मिला और शिव ने कोई वचन दिया तब वैताल नाम के बलबुद्धि में निपुण तेज प्रकाश स्वरूप सूत मतलब कि पुत्र हुआ। बड़वा पोथी के वर्णन में आगे यह बताया गया है कि भीमसेण नाग लोक से अपने पुत्र वैताल को लेकर पाटण आते है और वहा अपना राज्य स्थापित करते हैं और कुछ समय के बाद राव वैताल भट अवंतिका सम्राट विक्रमादित्य के साथ सहयोगी के रूप में जुड़ जाते हैं और राजा विक्रमादित्य राव वेताल भट को उज्जैनी का सामंत बनाकर सदा अपने साथ रखते थे।

इस बात से यह अनुमान किया जा सकता है कि पाटण और नागलोक का कुछ संबंध रहा होगा यह नागलोक इस विस्तार के किसी क्षेत्र को माना गया है और उक्त व्यक्ति नाग कौन लोग थे और किस प्रदेश में निवास करते थे।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

प्रोफ़ेसर यशवंत रावल के पुस्तक पातालनगर पालनपुर में उन्होंने बताया है कि नाग जाति के राजकीय प्रभाव को आर्य क्षत्रियो ने कम कर दिया और नाग प्रजा को हिमालय क्षेत्र से खदेड़ दिया, धीरे-धीरे नाग प्रजा स्थानांतरण करके गंगा जमुना नदी के तट पर आकर बस गए और महाभारत काल में इंद्रप्रस्थ के आसपास उनका निवास रहा। वहां उनका काफी संहार हुआ और भयभीत होकर नाग प्रजा उत्तर में से दक्षिण की ओर सलामती के कारण स्थानांतरण करती रही, उस समय नागलोक अंबिका के शरण में आकर निवासरत हुए और अंबाजी पर्वत, आबू पर्वत, ईडर के पर्वत और पालनपुर के पर्वत से रण प्रदेश के क्षेत्र में उनका निवास रहा। इस तथ्य से यह अनुमान किया जा सकता है कि हम इस लेख में जिस नागलोक या पाताल लोक की बात कर रहे हैं वह आज के पालनपुर से अंबाजी ईडर प्रदेश का क्षेत्र हो सकता है।

बड़वा पोथी में वर्णन है कि भीमसेण को पाताल लोक के राजा ने बुलाया था और अपना गुरु बनाया था भीमसेण ने पाताल लोक के राजा को ज्ञान एवं विद्या देने के लिए पिंगल नाम के ग्रंथ की रचना की, उस वक्त वक्त भीमसेण परिवार सहित नागलोक या पाताल लोक गए थे और वहां उनके पुत्र वैताल का जन्म हुआ था। पुत्र वैताल को भीमसेण ने अपनी विद्या प्रदान की। बड़वा पोथी में लिखा है कि नागराज ने ग्रंथ लिखवाया और उस पिंगल ग्रंथ का अमृत वेताल ने पिया मतलब की भीमसेण ने अपनी विद्या पुत्र वेताल को प्रदान की और बाद में उल्लेख मिलता है कि भीमसेण पुत्र वेताल और परिवार को लेकर पाटण पधार गए और वहां अपना राज्य स्थापित किया। हो सकता है कि उस समय पाटण या पाटण के किसी क्षेत्र का शासन नागराज ने राव भीमसेण भट को दिया हो।

आगे एक कवित में शिव बताया है वह नागराज हो सकते हैं जिन्होंने ही पाटण का क्षेत्र दिया हो सकता है। एक कवित और भी मिलता है -

पाताल स्यु परत हुई बसायों पाटण गढ़,

सूत वैताल कुशल करी बैठायों पाटण गढ़ ।

इस कवित से स्पष्ट होता है कि भीमसेण भट पाताल से पाटण (गुजरात) आकर बसे और पुत्र वैताल को सभी विद्याओं में निपुण करके पाटण के या पाटण के किसी क्षेत्र के शासन पर स्थापित किया। भविष्य पुराण में मौर्य वंश का वर्णन मिलता है जिसमें राजा विक्रमादित्य के रक्षार्थ शिव पार्वती ने वैताल भट को सौंपा था इसका मतलब यह भी हो सकता है कि राजा विक्रमादित्य शिवभक्त होंगे और उनकी प्रार्थना व तपस्या के फल स्वरूप शिव पार्वती ने वैताल भट को उनके रक्षार्थ 32 मूर्ति वाले सिहासन के साथ सौंपा था।

राव वेताल भट ने राजा विक्रमादित्य को 16 छंद नीति आचरण सिखाया था और राव वैताल भट युद्ध कौशल के महारथी भी थे जो हमेशा सम्राट विक्रमादित्य के निकट ही रहते थे।

इस लेख में लोग बोलचाल, दुहे, कथाएं, कविता, बड़वा पोथी, साहित्य और ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर विद्वान और महारथी राव वेताल भटके जीवन और योगदान के बारे में हमने चर्चा करने की कोशिश की है। भारत ऐसे कई योद्धा, बलशाली व बुद्धिशाली से ही महान बना है जिस देश की संतान होने का हम सभी को गौरव है।

<u>संदर्भ: - (लेख का आधार)</u>

१. बड़वा पोथी
२. भविष्य पुराण
३. राजा विक्रमादित्य: साहित्य का इतिहास - एम. आई. राजस्वी
४. लोक कथा व लोक साहित्य की रचनाये
५. समाज के ज्ञानी व्यक्तिओ से मुलाक़ात और उनके मंतव्य
६. पातालनगर पालनपुर - प्रोफेसर यशवंत रावल

Copyright @ 2023 Author